P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ0 अम्बेडकर की जाति सम्बन्धी विचारधारा और प्रेमचन्द

Dr. Ambedkar's caste related ideology and Premchand

Paper Submission: 07/01/2020, Date of Acceptance: 16/01/2020, Date of Publication: 20/01/2020

शैलजा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय,
रूधौली-बस्ती,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

जाति शब्द बहुत ही व्यापक अर्थ रखता है। 'जाति' किसी राष्ट्र की पहचान होती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'समूची जाति (राष्ट्र) भी एक व्यक्ति, मनुष्य की भांति है।'[1] अर्थात् व्यक्ति अथवा मनुष्य मिलकर जाति का निर्माण करते हैं। जैसे बूंद-बूंद से लहरें और लहरों से समुद्र बनता है उसी प्रकार व्यक्ति से समाज का निर्माण होता है।

किंतु समाज जब खण्डों में विभक्त हो, वर्ग विशेष या समुदाय तक सीमित हो, निजी स्वार्थ की सिद्धि में लीन हो जाता है, तब उसमें विकास उत्पन्न हो जाता है। कुछ ऐसा ही भारतीय समाज में भी है।

भूखण्डलीकरण के इस युग में जब किसी भी राष्ट्र की कोई सीमा नहीं रह गई है। आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान सब कुछ एकमएक हो गये हैं। ऐसे में स्वार्थ के वशीभूत होकर भारत में अभी भी 'जाति' जैसे व्यापक भावना को संकीर्ण रास्तों पर लाकर खण्डा कर दिया गया है। जातीय चेतना बुरी नहीं है किन्तु जाति को वर्ग विशेष तक सीमित कर उसका स्वार्थवश उपयोग राष्ट्र की उन्नति में अवरोध उत्पन्न करते हैं।

The word caste has a very wide meaning. 'Caste' is the identity of a nation. According to Acharya Hazari Prasad Dwivedi, 'The entire caste (nation) is also like an individual, a human being.'1 That is, individuals or human beings together form a caste. Just as waves are formed from drops and seas are formed from waves, similarly society is formed from individuals.

But when society is divided into parts, limited to a particular class or community, gets absorbed in the fulfillment of personal interests, then development takes place in it. Something similar is happening in Indian society as well.

In this age of land-grazing when there is no limit to any nation. Conduct, thinking, lifestyle, food habits, everything has become one. In such a situation, under the influence of selfishness, a broad feeling like 'caste' has been broken by bringing it to narrow paths in India. Caste consciousness is not bad but limiting caste to a particular class and using it for selfish purposes creates obstacles in the progress of the nation.

मुख्य शब्द : सास्कृतिक धरोहर, मन्दिर, पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग।।

Keyword: Cultural heritage, Temples, Panch Badri, Panchkedar, Panchprayag.

प्रस्तावना

दलितों के मसीहा कहे जाने वाले बाबा साहब अम्बेडकर जी ने जाति व्यवस्था की समस्या पर विचार करते हुये यह स्पष्ट किया है कि जातिवाद की समस्या के साथ ही अन्य कुप्रथाओं का प्रचलन हुआ। अपने निबंध 'भारत में जातियां तथा ब्राम्हणवाद की विजय' में उन्होंने लिखा है कि:ःसती प्रथा, बालिका विवाह और स्त्रियों का वैधव्य जैसी कुप्रथाएँ जातिवाद की समस्या के साथ ही न केवल उत्पन्न हुई ह। बल्कि परस्पर सम्बद्ध भी है। नृजाति विज्ञानियों के लोग जत्थों में सदियों पहले अपनी संस्कृतियों के साथ भारत में उस समय आये थे जब वे कबीलाई अवस्था में थे। जो इनसे पहले आ चुके थे और यहां के निवासी बन चुके थे उसके साथ इन बहिरागत तकबीलों का संघर्ष हुआ लेकिन बाद में ये भी यहां बस गये। निरंतर सम्पर्क और आपसी मेलजोल में उनमें एक समन्वित संस्कृति विकसित की है।" [2]

"किन्तु अपनी कबीइलाई क्षमता की वृद्धि हेतु उन्होंने सजातीय विवाह का नियम बनाया और जाति की उत्पत्ति यहीं से हुई। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जब लोक जत्थों में अपनी संस्कृतियों के साथ यहां आये तो अपने कबीलों को समृद्ध व मजबूत बनाने के लिये उन्होंने अपने कबीले में ही विवाद कानियम बनाया होगा ताकि ऐसे विवाहों से उत्पन्न संतानें उसी कबीले का अंग बने और उसकी बेहतरी के लिये काम करे। कालान्तर में इसी व्यवस्था ने जाति का रूप धारण किया होगा।" [3]

डॉ. अम्बेडकर यह भी स्वीकार करते हैं कि जाति व्यवस्था लोगों पर आरोपित नहीं की गई है अपितु लोगों ने उसे स्वेच्छा से स्वीकार किया था। उनका कथन है- "न तो मनु ने या उन जैसे लोगों ने और न ब्राम्हणों ने लोगों पर जाति व्यवस्था आरोपित की थी बल्कि इसे तो लोगों ने स्वयं स्वेच्छा से अंकीकार किया था।' [4]

यहां एक बात उल्लेखनीय है कि भले ही मनु या उन जैसे ब्राम्हणों ने जाति व्यवस्था को थोपा न हो किन्तु उन्होंने उस व्यवस्था को मजबूती अवश्य प्रदान की है।

डॉ. अम्बेडकर के विचारों से समानता रखने वाले ब्राम्हणवादी विचारधारा के आलोचक हिन्दी सांहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी ने भी जाति व्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के कारण तत्वों में ब्राम्हणवादी विचारधारा को ही दोषी माना है। प्रेमचन्द्र जी ने भी दलितों की शोचनीय स्थिति को अपने साहित्य में जगह ही नहीं दी अपितु उस पर गहन विचार किया है। ऐसे प्रश्न उठाये हैं जिनसे इस समस्या का समाधान निकल जाये। उनके साहित्य ने उच्च वर्गासीनों में हृदय को झंझोड़ कर उन्हें सोचने पर विवश कर दिया है। जाति व्यवस्था जैसी कुप्रथा ब्राम्हणों के भय एवं दलितों द्वारा उसे अपनी नियति मानने के कारण ही फैली थी। प्रेमचन्द की 'सद्गति' कहानी के पात्र दुःखी के मन में ब्राम्हण की श्रेष्ठता इस कदर हावी है कि वह उनकी बात को ही अंतिम सत्य मान लेता है- "सच ही तो कहती हैं। पंडित के घर में चमार कैसे चला आये। बड़े पत्रित होते हैं ये लोग, तभी तो संसार पूजता है, तभी तो इतना मान है। भर-चमार थेड़े ही हैं। इसी से तो संसार डरता है। और सबके रूपये मारे जाते हैं। ब्राम्हण के रूपये भला कोई मार तो ले। घर भर का सत्यानाश हो जाए, पांव गल-गलकर गिरने लगें।" [5]

जाति प्रथा को मानने का कारण अमानवीय या अन्यायपूर्ण व्यवहार नहीं है। अपितु यह धर्म से जुड़ा है। इस बात को स्वीकार करते हुये डॉ0 अम्बेडकर का कथन है- 'मेरी राय में उनका धर्म दोषी है, जिसके कारण जाति व्यवस्था की धारणा का जन्म हुआ है।" इसके लिए डॉ0 अम्बेडकर संघर्ष उन लोगों से नहीं स्वीकार करते जो धर्म को मानते हैं, अपितु उन शास्त्रों से मानते हैं, जिन्होंने जाति धर्म की शिक्षा दी है।" [6]

जाति प्रथा भी इस सदियों से चली आ रही मान्यता का धर्म से जुड़ा मुंशी प्रेमचन्द जी भी स्वीकार करते हैं। उन्होंने भी 'मंदिर' कहानी में मुखिया को पूजा न करने देने के लिये पुजारी या ठाकुर के प्रति घृणा के भाव के स्थान पर विचारधारा के आमानवीय एवं अन्यायपूर्ण होने को दोष देते हैं। [7]

धर्म के साथ ही जो महत्वपूर्ण कारक प्रेमचन्द जी डा0 अम्बेडकर जी एक साथ स्वीकार करते हैं, वह हैं रोटी-बेटी का सम्बन्ध अर्थात सजातीय विवाह। डॉ0 अम्बेडकर ने अपने लेख 'जाति प्रथा उन्मूलन' में लिखा है कि - "जाति व्यवस्था समाप्त करने की एक योजना है कि अन्तर्जातीय खान-पान का आयोजन किया जाय। मेरी राय में यह भी उपाय पर्याप्त नहीं है। ऐसी अनेक जातियां हैं, जो अन्तर्जातीय खान-पान की अनुमति देती है। इनसे जाति-भावना या जाति-बोध को समाप्त करने में सफल नहीं हो पायी है।"

इस जड़ कुप्रथा केा समाप्त करने का कारगर उपाय आखिर क्या हो सकता है? इस प्रश्न का जिस प्रकार डा0 अम्बेडकर जी ने उपाय सुझाया है ठीक उसी प्रकार प्रेमचन्द जी ने भी सुधारात्मक प्रयत्न साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

जिस प्रकार डॉ0 अम्बेडकर अन्तर्जातीय विवाह को महत्व देते हैं ठीक उसी प्रकार प्रेमचन्द जी ने भी अस्पृश्यता या जाति प्रथा को महत्व देने वाले कारकों से मुक्ति के लिये अन्तर्जातीय विवाह का प्रश्न अपनी कहानी 'मंत्र' मं उठाते हैं- अछूत बूढ़े और पं0 की लीलाधर के संवादों में यह बात स्पष्ट हो जाती है-

''बूढ़ा-मेरे लड़के से अपनी कन्या का विवाह की जाएगा?

लड़ीलाधर- जब तक तुम्हारे जन्म संस्कार न बदल जाएँ, जब तक तुम्हारे आहार-व्यवहार में परिवर्तन न हो जाए, हम तुमसे विवाह का सम्बन्ध नहीं कर सकते, मांस खाना छोड़ो, मंदिरा पीना छोड़ो, शिक्षा ग्रहण करो तभी तुम उच्च-वर्ण के हिन्दुओं में मिल सकते हो।'' [8]

''बूढ़ा-ऋषियों को मत बदनाम कीजिये। यह सब पाखण्ड आप लोगों का रचा हुआ है। आपके धर्म में वही ऊँचा है, जो बलवान है। वही नींच है, जो निर्बल है। यही आपका धर्म है।'' [9]

इस प्रकार प्रेमचन्द्र जी ने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि वे अछूतों के साथ रोटी का संबंध तो स्वीकार है किन्तु बेटी का संबंध उन्हें स्वीकार्य नहीं है। किन्तु प्रेमचन्द जी ने ब्राम्हणवादी विचारधारा पर प्रहार करने के साथ ही दलितों की मानवतावादी गुणों के कारण 'हृदय परिवर्तन' भी करवाया है। यानि समस्या का यर्थाथ चित्रण करने के साथ ही उन्होंने उसमें सुधारात्मक प्रयत्न भी किया है। तो उनका 'हृदय-परिवर्तन' होता है।

केवल हृदय ही नहीं वें डॉ0 अमब्ेडकर की भाँति शोषण के विरूद्व आवाज भी उठाते हैं जाति व्यवस्था की कुप्रथा को मँुहतोड़ जवाब प्रेमचन्द्र प्रतीकात्मक रूप में दूध का दाम' कहानी में देते हैं। 'भंगी का दूध पीकर बड़े हुए सुरेश का भी छूआछूत में विश्वास है और यही नहीं खेल-खेल में भंगी के बेटे मंगलू को उसके तीन साथ जिस प्रकार उसे घोड़ा बनाकरसवारी करना चाहते हैं और मंगलू भी जिस तरह सुरेश को अपनी पीठ से गिरा देता है। ''यहाँ सुरेश को गिराना निश्चित रूप से प्रतीकात्मक रूप में दलितों का शोषण के विरूद्व आवाज उठाना ही है।[10]

जाति व्यवस्था की कुप्रथा अस्पृश्यता को दूर करने के लिए डॉ0 अम्बेडकर 'शिक्षा एवं ज्ञान के प्रसार' कबो महत्व देते हैं। उनका कथन है 'इससे पूर्व कि किसी अन्याय, किसी कुरीति या दमन का प्रतिरोध किया जा सके, वह अति आवश्यक है कि उसके मूलाधार झूठ को बेनकाब करके उसे भलीभांति पहचान लिया जाए। यह केवल शिक्षा द्वारा ही हो सकता है''।[11]

शिक्षा की अनिवार्यता प्रेमचन्द जी ने स्वीकार की है। उपर्युक्त अछूत बूढे और पं0 लीलाधर के संवाद में पं0 लीलाधर का बेटी के सम्बंध को लेकर यह कहना 'शिक्षा ग्रहण करो' से स्पष्ट है कि प्रेमचन्द के यह विचार भी डॉ0 अम्बेडकर के जाति रहित भारत की परिकल्पना का स्फुरण प्रेमचन्द के साहित्य में विद्यमान है। उसका सही परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वयन जाति व्यवस्था की कुप्रथा के उन्मूलन के लिए बेहतर समाधान साबित हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हजारी प्रसाद द्विवेदी*
2. *सुरेश पंण्डित 'युग तेवर' जाति रहित देश का सपना' (लेख) पृ. 7*
3. *वही, पृ. 7-8*
4. *वही, पृ. 7,*

5. *प्रेमचन्द की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड-1, पृ. 665*
6. *बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्मयः, खण्ड 1, पृ. 90*
7. *वहीं पृ. 90*
8. *बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्यम खण्ड-1, पृ. 90*
9. *प्रेमचन्द्र की सम्पूर्ण कहानियाँ खण्ड-2 पृ. 28*
10. *प्रेमचन्द्र की समप्ूर्ण कहानियाँ खण्ड-1 पृ. 345*
11. *अम्बेडकर से दोस्तीः समता और मुक्ति, पृ. 94*